कन्या– नौका पर बैठी हुई हाथ में धान और दीपक को लेकर बैठी हुई कन्या के समान।

तुला– तराजु हाथ में लिये पुरुष के समान।

वृश्चिक– बिच्छु के समान।

धनु– धनुष हाथ में लिये हुवे, कमर के नीचे घोड़े के समान।

मकर– मृग के सदृश्य मुख वाला।

कुम्भ– कन्धे पर कलश लिये पुरुष के समान।

मीन– दो मछलियों में एक के मुख पर दूसरे के पूंछ लगकर गोल बनी हुई है।

राशियों के निवास स्थान–

मेष– इस राशि का स्थान निवास स्थान धातु और रत्न, भूमि है।

वृष– इस राशि का स्थान पर्वत शिखर,कृषी भूमि, गोशाला और वन प्रदेश है।

मिथुन– इस राशि का स्थान जुँआ खेलने का स्थान, रति–विहार भूमि है।

कर्क– इस राशि का स्थान बावड़ी, पोखरादि का किनारा है।

सिंह– इस राशि का स्थान गुफा, वन प्रदेश, पहाड़ है।

कन्या– इस राशि का स्थान हरे भरे मैदान, शिल्प भूमि, स्त्री–पुरुष क्रीड़ा स्थल है।

तुला– इस राशि का स्थान सम्पूर्ण धन स्थान और बाजार है।

वृश्चिक– इस राशि का स्थान पत्थर, जहर तथा कृमियों के बिल है।

मकर– इस राशि का स्थान नदियों के जल तथा वन (पूर्वाद्ध वन में उत्तरार्ध जल में) है।

कुम्भ– इस राशि का स्थान घड़ा और जल पात्र रखने का स्थान है।

मीन– इस राशि का स्थान मछलियों के निवास स्थान जैसे नदी,

Scanned with CamScanner

समुद्र, जल स्थान आदि है।

प्रयोजन– नष्ट वस्तु के स्थान आदि के परिज्ञान तथा प्रसव स्थान के ज्ञान हेतु इसका प्रयोग किया जाता है।

राशियों की चतुष्पदादि संज्ञा–

धनु का परार्ध (उत्तरार्ध) सिंह, वृष, मकर का पूर्वार्द्ध और मेष ये चतुष्पद है और ये दशम भाव में बली होते हैं।

मिथुन, कन्या, कुम्भ, तुला, धनु का पूर्वार्द्ध ये नर या द्विपद राशि है। ये लग्न मे बली होती हैं।

मकर का परार्ध (उत्तरार्ध) कर्क और मीन जल चर है ये चतुर्थ भाव में बली होते हैं।

वृश्चिक जलाश्रय है व सप्तम स्थान पर प्राप्त होने पर बली होती है।

द्विपद (नर) केन्द्र में प्राप्त होकर दिन में बली होती हैं।

चतुष्पद केन्द्र में जाने पर बली होती हैं। सभी कीट (जलचर) केन्द्र में प्राप्त होकर दोनों साध्याओं (सुबह–शाम) में बली होती हैं।

प्रयोजन– जन्म समय और प्रश्न लग्न में इन राशियों का बलाबल प्रश्न के सम्यक विवेचन में सहायक होता है।

राशियों की धातुमूलादि संज्ञा–

ज्योतिष ग्रन्थों में राशियों की धातु–मूल और जीव संज्ञा इस प्रकार बताई गई है।

धातु संज्ञक राशि– मेष, कर्क, तुला, मकर।

मूल संज्ञक राशि– वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ।

जीव संज्ञक राशि– मिथुन, कन्या, धनु, मीन।

प्रयोजन – राशियों की धातु आदि संज्ञा प्रश्न कुण्डली में पृच्छक की चिन्ता से सम्बन्धित है। इसके माध्यम से जातक के ''मुक'' प्रश्न का

Scanned with CamScanner

विचार किया जाता है।

धातु आदि का विशेष विवेचन–

धातु का आशय–स्वर्ण से लेकर मिट्टी तक समस्त वस्तुएँ धातु संज्ञक है।

मूल का आशय– महावृक्ष से लेकर तृण (तिनका) तक समस्त वस्तुएँ मूल संज्ञक है।

जीव का आशय– इस सृष्टि के समस्त प्राणि जीव–संज्ञक है।

ज्योतिष ग्रन्थों में कालपुरुष की कल्पना करके उसके विभिन्न अंगों में राशियों का विन्यास किया गया है । जो इस प्रकार है।

काल पुरुष के अंग में राशि विन्यास –

1. मेष – मस्तक
2. वृष – मुख
3. मिथुन – हाथ (भुजा)
4. कर्क – हृदय
5. सिंह – पेट
6. कन्या – कमर
7. तुला – नाभि से उपस्थ पर्यन्त
8. वृश्चिक – उपस्थ
9. धनु – जाँघ, कूल्हे
10. मकर – घुटने
11. कुम्भ – पिंडली
12. मीन – पैर

बारह राशियों में काल पुरुष के अंग विभाजन का प्रयोजन–

जातक के जन्म समय काल पुरुष की जो अंग राशि शुभ ग्रह से युक्त हो वह अंगपुष्ट होता है। जो राशि पाप ग्रह से आक्रान्त या पाप ग्रह से

Scanned with CamScanner

युत हो उस राशि अंग में पीड़ा, चोट या कमजोरी होती है।

राशियों का भीतरी अवयवों पर प्रभाव–

1. मेष – मस्तिष्क
2. वृष – कंठ, टांसिल
3. मिथुन – फेफड़े श्वास संबन्धी
4. कर्क – दिल, हृदय
5. सिंह – पाचन शक्ति
6. कन्या – आंते, पेट के भीतर का निचला हिस्सा
7. तुला – गुर्दे
8. वृश्चिक – मूत्रेन्द्रिय, जननेन्द्रिय
9. धनु – स्नायु मंडल एवं रक्तवाहक नसें
10. मकर – हड्डिया तथा जोड़
11. कुम्भ – रक्त तथा रक्त प्रवाह
12. मीन – शरीर में कफोत्पादन

राशि संज्ञा–

1. **क्रूर (पुरुष/ओज) राशि–** मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुम्भ।
2. **सौम्य (स्त्री) राशि–** वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन।

राशियों की चरादि संज्ञा –

1. **चर राशियाँ–** मेष, कर्क, तुला, मकर (1, 4, 7, 10)
2. **स्थिर राशिया–** वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ (2, 5, 8, 11)
3. **द्विस्वभाव राशि–** मिथुन, कन्या, धनु, मीन (3, 6, 9, 12)

राशियों के उदय प्रकार –

1. **पृष्ठोदय राशि–** मेष, वृष, कर्क, धनु, मकर (1,2,4,9,10)

Scanned with CamScanner

2. शीर्षोदय राशि– मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ (3,5,6,7,8,11)

3. उभयोदय– मीन (12)

शीर्षोदयादि राशि संज्ञा का प्रयोजन–

शीषोदय राशि में शीघ्र कार्य सिद्धि, पृष्ठोदय राशि में कार्य की विफलता और उभयोदय राशि में समफल प्राप्ति। इसका प्रश्न और यात्रा में विचार किया जाता है।

राशियों की ह्रस्वादि संज्ञा–

1. मेष वृष कुम्भ मीन (1,2,11,12) – ह्रस्व राशि
2. मिथुन कर्क धनु मकर (3, 4, 9, 10) – समोदय राशि
3. सिंह कन्या तुला वृश्चिक (5, 6, 7, 8) – दीर्घ राशि

राशियों की ह्रस्वादि संज्ञा का प्रयोजन –

जन्म कुण्डली के जिस भाव अंग अर्थात लग्नादि क्रम से शीर्ष इत्यादि में जिस प्रकार की राशि आदि है वह अंग वैसा ही ह्रस्व दीर्घादि होता है।

राशियों की दिशा –

मेष, सिंह, धनु – पूर्व दिशा
वृष, कन्या, मकर – दक्षिण दिशा
मिथुन, तुला, कुम्भ – पश्चिम दिशा
कर्क, वृश्चिक, मीन – उत्तर दिशा

Scanned with CamScanner

राशि दिशाओं का प्रयोजन –

जन्मकाल में सूतिका घर के द्वार का ज्ञान, चुराई गई वस्तु का अर्थात खोई वस्तु का ज्ञान एवं चोर की दिशा का ज्ञान।

1. रात्रि बली राशियाँ –

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धनु, मकर (1, 2, 3, 4, 9, 10)

2. दिवा बली राशियाँ –

सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ, मीन (5, 6, 7, 8, 11, 12)

राशियों के वर्ण (जाती) –

1. क्षत्रिय वर्ण – मेष सिंह धनु (1, 5, 9)
2. वैश्य वर्ण – वृष, कन्या, मकर (2, 6, 10)
3. शूद्र वर्ण – मिथुन, तुला, कुम्भ (3, 7, 11)
4. विप्रवर्ण – कर्क, वृश्चिक, मीन (4, 8, 11)

राशियों के तत्व–

1. अग्नि तत्व – मेष, सिंह, धनु (1, 5, 9)
2. पृथ्वी तत्व – वृष, कन्या, मकर (2, 6, 10)
3. वायु तत्व – मिथुन, तुला, कुम्भ (3, 7, 11)
4. जल तत्व – कर्क, वृश्चिक, मीन (4, 8, 12)

राशि संज्ञाओं का प्रयोजन– क्रूर (पुरुष) राशि में जायमान जातक क्रूर और तेजस्वी स्वभाव का होता है। सौम्य (स्त्री) राशि में जायमान जातक सौम्य स्वभाव का होता है। चर राशि में चंचल प्रकृति, स्थिर में स्थिर प्रकृति और द्विस्वभाव राशि में मिश्रित प्रकृति होती है। ब्राह्मण वर्ण राशि

Scanned with CamScanner

में जातक क्षमावान, क्षत्रिय वर्ण में बदले की भावना, वैश्य वर्ण में कंजूस या धन संचयी, शूद्र वर्ण में चापलूसी करने वाला होता है।

राशियों के स्वामी–

मेष	–	मंगल
वृष	–	शुक्र
मिथुन	–	बुध
कर्क	–	चन्द्र
सिंह	–	सूर्य
कन्या	–	बुध
तुला	–	शुक्र
वृश्चिक	–	मंगल
धनु	–	गुरु
मकर	–	शनि
कुम्भ	–	शनि
मीन	–	गुरु

* * *

Scanned with CamScanner